ओ३म्

प्रतिभा आर्या

M.A. द्वितीय सेमेस्टर
संस्कृत-विभाग P.U.
CC-VI पद्यकाव्य

संस्कृतज्ञ विद्वत्समाज में कौन ऐसा व्यक्ति है जो 'कविकुल गुरु', 'कवि शिरोमणि' 'वाग्देवतावतार' कालिदास से परिचित न हो, केवल भारतीय समाज में ही नहीं अपितु विश्वपटल पर जिनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा, अद्‌भुत कल्पनाशक्ति, और उत्कृष्ट नाटक-निर्माण कौशल पर मुग्धता प्रसारित हुई। ज्यों ज्यों इस महाकवि की कृतियों का अनुशीलन होता जाता है त्यों त्यों इसकी प्रतिभा एवं सकल कृतित्व का ज्ञान बढ़ता जाता है। कालिदास रचित ग्रन्थमाला के विषय में विद्वानों में मतभेद होते हुए भी, सर्वसम्मति 7 सप्त ग्रन्थों पर बनती है जिनमें दो गीतिकाव्य, दो महाकाव्य, तथा 3 तीन नाटक माने गए हैं। गीतिकाव्य-मेघदूत, जिसे खण्डकाव्य या दूतकाव्य नाम से भी कहा जाता है उसके उत्तरमेघ में मुख्यरूपेण अलकापुरी का वर्णन किया गया है। उत्तरमेघ के 37 वें श्लोक को हम पढ़ेंगे।

पद्य - (1) तस्मिन् काले जलद यदि सा लब्धनिद्रासुखा स्या-
दन्वास्यैनां स्तनितविमुखो याममात्रं सहस्व।
मा भूदस्याः प्रणयिनि मयि स्वप्नलब्धे कथञ्चित्
सद्यः कण्ठच्युतभुजलताग्रन्थि गाढोपगूढम् ॥37॥ (उत्तरमे.)

पदच्छेद - जलद = जलं ददाति इति जलदः, जो जल प्रदान करता है, यहाँ मेघ को सम्बोधन में कहा है। जल + दा + क
लब्धनिद्रासुखा लब्धं निद्रायाः सुखं यया सा-लब्धनिद्रासुखा (बहुव्रीहि समास) प्राप्त किया गया है नींद का सुख जिसके द्वारा
स्तनितविमुखः स्तनितात् विमुखः (पञ्चमी तत्पुरुष)
स्तनित = गर्जन, मेघ का घोष शब्द
याममात्रम् - यामम् एव याममात्रम् तत् = पहर भर, तीन घण्टे
स्वप्नलब्धे - स्वप्ने लब्धः (सप्तमी त.) स्वप्न में प्राप्त
गाढोपगूढम् - गाढं च तत् उपगूढम् (कर्मधारय स.) दृढ़ आलिंगन
गाह् + क्त, उप + गुह् + क्त।
कण्ठच्युतभुजलताग्रन्थि - कण्ठात् च्युता भुजलतयोः ग्रन्थिः यस्य तत् (बहुव्रीहि स.) कण्ठ से दूर हुई लतासदृश भुजाओं की गांठ जिससे ऐसी यक्षिणी

प्रसङ्ग - यक्ष मेघ को निर्देश देते हुए कह रहा है कि यदि मेरी विरहिणी भार्या नींद में हो तो कुछ काल प्रतीक्षा करके ही उसके समीप जाना।

व्याख्या - मेघदूत, ग्रन्थ के अनुरूप ही नाम रखा गया है अर्थात् जिस काव्य में मेघ दूत रूप में है उसे मेघदूत कहते हैं अत यक्ष

Scanned with CamScanner

निवेदन करते हुए कह रहा है (जलद! तस्मिन् काले यदि सा लब्धनिद्रासुखा स्यात्) हे मेघ, जिस समय तुम मेरी भार्या के पास पहुँचोगे, उस समय यदि वह मेरी विरही यक्षिणी नींद का सुख प्राप्त कर रही हो तो, क्योंकि विरह के दिन सर्वथा असामान्य होते हैं नींद नहीं आती, भूख नहीं लगती, मन उचटा उचटा सा रहता है पर अधिक शरीर में कष्ट वा कमजोरी होने पर आंख लग जाती है, तो ऐसी स्थिति में यदि तुम मेरा सन्देश लेकर भी चले गए तो, उसे उठाना मत अर्थात् (एनाम् अन्वास्य स्तनित-विमुखः याममात्रं सहस्व) इस मेरी भार्या के अन्वास्य = अनु+आस्य अनु = पीछे, आस्य = बैठकर, पीछे बैठकर, कैसे? बिजली से रहित, गर्जना से रहित होकर, याम = पहर, पहर = तीन घण्टे, तीन घण्टे सहन करो, जब तुम पहुँचे यक्षिणी सुखपूर्वक नींद में है तो तुम बिना आवाज किए, क्योंकि आवाज करोगे तो वह जग जायेगी अतः ध्वनि रहित घोष से रहित होकर एक प्रहर भर बैठना, प्रतीक्षा करना, ऐसा न करना कि मेरे सन्देश को सुनाने की उत्सुकता में उसे नींद से उठा दो, क्योंकि विरहकाल में नींद बड़े प्रयत्न से कभी कभार आ जाती है अतः तुम प्रतीक्षा करना क्योंकि (अस्याः प्रणयिनि मयि कथञ्चित् स्वप्नलब्धे गाढोपगूढं सद्यः कण्ठच्युत-भुजलताग्रन्थि मा भूत्) इस यक्षिणी के, प्रियतम मेरे, किसी प्रकार स्वप्न में प्राप्त होने पर, गाढ़ आलिङ्गन, एकाएक = अचानक गले में लताओं जैसी भुजाओं का बन्धन छूट न जाए।

यक्ष कहना चाहता है जिस समय वह नींद में है क्या पता उसे मेरा स्वप्न आ रहा हो और वह स्वप्न में जैसे लताएं = बेल वृक्ष को चारों ओर से बांध लेती हैं उसी प्रकार यक्षिणी ने मुझे अपनी भुजाओं से कसकर प्रेमपाश में बांध रखा हो, और ऐसे समय में गर्जन हुआ तो वह डरकर छोड़ देगी, और स्वप्न में भी हम आधे अधूरे हो जायेंगे अतः कम से कम स्वप्न में तो हम प्रेम में आलिङ्गित हो लें।

भावार्थ - मेघ! मेरी कुटिया पर यदि यक्षिणी नींद में हो तो चुपचाप बैठ कर प्रतीक्षा करना क्या पता नींद में आए हुए स्वप्न में वह मेरे गले में अपनी भुजलताओं को डालकर प्रगाढ आलिंगन की स्थिति में हो।

पद्य - (2) तामुत्थाप्य स्वजलकणिकाशीतलेनानिलेन
प्रत्याश्वस्तां सममभिनवैर्जालकैर्मालतीनाम् ।
विद्युद्गर्भः स्तिमितनयनां त्वत्सनाथे गवाक्षे
वक्तुं धीरः स्तनितवचनैर्मानिनीं प्रक्रमेथाः ॥उत्तरमे. ३४॥

पदच्छेद — तां + उत्थाप्य = तामुत्थाप्य।
स्वजलकणिकाशीतलेन + अनिलेन = दीर्घसन्धिः अकः सवर्णे दीर्घः।
प्रति + आश्वस्ताम् = प्रत्याश्वस्ताम् = यण् सन्धि - इकोयणचि।
समम् + अभिनवैः + जालकैः + मालतीनाम् - स ससजुषो रुः।
विद्युत् + गर्भः = विद्युद्गर्भः - व्यंजन संधि - भलांजश् झशि।
स्तनितवचनैः + मानिनीम् - स ससजुषो रुः - विसर्ग सन्धि।

व्याख्या — (स्वजलकणिकाशीतलेन अनिलेन तां उत्थाप्य) स्वस्य जलस्य कणिकाभिः शीतलेन (तृतीया तत्पुरुष) हे मेघ! इसे स्वयं ही अर्थ के अनुसार अध्याहार कर लेंगे, अध्याहार अर्थात् आहारस्य समीपम् अध्याहारम् ,अपने ग्रहण के योग्य शब्द समीप में हो उसे ग्रहण कर लेना, क्योंकि यहाँ मेघ बोलकर उसे सम्बोधित तो नहीं किया गया है अतः हम उसे अथवा अन्य भी शब्दों को प्रसङ्ग के अनुकूल ग्रहण कर सकते हैं। हे मेघ! अपने जलकणों से शीतल वायु के द्वारा तां उसको = मेरी प्रियतमा को, उठा कर (अभिनवैः मालतीनां जालकैः समं प्रत्याश्वस्ताम्) नवीन, मालती= चमेली की कलियों के साथ स्वस्थ हुई, अर्थात् जो यक्ष की प्रिया है वह चमेली की कलियों की तरह कोमल है चमेली की जल कणों के पड़ने पर ताजी पुलकित हो जाती है उसी प्रकार मेरी प्रिया तुम्हारे जल-कणिकाओं से (बून्दों) से स्वस्थता को प्राप्त हो जायेगी, (त्वत् सनाथे गवाक्षैः स्तिमितनयनाम् मानिनीम्) तुम से युक्त, गवाक्षैः खिड़कियों से, जब मेघ जायेगा तो यक्षिणी के पास खिड़की के द्वारा अपने जलकणों से जो उसके घर में प्रवेश करेगा, उसी को यहाँ कहा कि तुम खिड़की के समीप ही हो अधिक दूर नहीं हो ऐसा यक्षिणी अपने स्तिमितनयनाम्= निश्चल, निष्कम्प, चाञ्चल्य से दूर नयनों वाली मनस्विनी से मानः अस्याः अस्ति इति मानिनी ताम्= मान + इन् इनिः + ङीप् अथवा मन्यते इति मानिनी मन् + णिनि + ई (स्त्रियाम्) जो अनौचित्य को सहन न करे वह स्त्री मानिनी है, जब वह अचानक उठेगी तो सामने अपलक देखती ही रह जायेगी कि मेरे द्वार पर गवाक्ष पर कौन आ गया है इसी भाव को व्यक्त करते हुए — वह अपलक नेत्रों से देखती हुई मानिनी यक्षिणी (विद्युत्गर्भः धीरः (त्वं सन्) स्तनितवचनैः वक्तुं प्रक्रमेथाः) विद्युत्गर्भः विशेषण मेघ के लिए है विद्युत् गर्भः यस्य सः (बहुव्रीहि) अपने भीतर बिजली को रखने वाला, विद्युत् को मेघ की पत्नीरूप में स्वीकार किया है, उसे अपने भीतर छिपा के ही जाना, यदि तीव्र प्रकाश दिखेगा तो मानिनी विश्वस्त न हो अतः उसे अपने साथ अपने भीतर छिपा कर रहना, मैं (यक्ष) तो विरह में हूँ ही पर तुम विरह में मत रहना अपनी प्रियतमा के साथ ही

Scanned with CamScanner

जाना पर उसे छिपा कर रखना, गर्भ में, जैसे माँ छिपाती है अपने अंश को उसी प्रकार तुम भी छिपा कर, तुम गम्भीर (मेघ) स्तनितवचनैः गर्जनरूपी शब्दों से स्तनितानि एव वचनानि तैः बोलना प्रारम्भ करना प्रक्रमेथाः प्र + क्रम् + विधिलिङ् मध्यम पुरुष एकवचन।

भावार्थः- हे मेघ! अपने जलकणों से शीतल मन्द पवन द्वारा उसे जगाकर ईंचमेली की कलियों के साथ-साथ स्वस्थ हुई, तुम से युक्त खिड़की की ओर अपलक नेत्रों से वाली मनस्विनी से अपनी भार्या बिजली को गर्भ में ही रखते हुए गम्भीर गर्जना द्वारा उसे बोलना प्रारम्भ करना।

पद्य - ③ भर्तुर्मित्रं प्रियमविधवे विद्धि मामम्बुवाहं
तत्सन्देशैर्हृदयनिहितैरागतं त्वत्समीपम्।
यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां प्रोषितानाम्
मन्द्रस्निग्धैर्ध्वनिभिरबलावेणिमोक्षोत्सुकानि॥
॥ उत्तरमेघ ३५॥

पदच्छेद - भर्तुः + प्रियम् - स सजुषो रुः। प्रियम् + अविधवे
माम् + अम्बुवाहम् = अम्बु वहतीति अम्बुवाहम्
तत्सन्देशैः - तस्य सन्देशैः तत्सन्देशैः (षष्ठी त०) सम् + दिश् + घञ्
त्वत्सन्देशैः + हृदयनिहितैः + आगतम्।
मन्द्रास्निग्धैः + ध्वनिभिः + अबलावेणिमोक्षोत्सुकानि

व्याख्या - (हे अविधवे! माम्, भर्तुः प्रियम् मित्रम्) अविधवे = सम्बोधन एकवचन, ध्रुव अर्थात् पति, विगतः ध्रुवः यस्याः सा विधवा, (बहु०) चला गया है पति जिसका उसे विधवा, न विधवा अविधवा (नञ् त०) जिसका पति न गया हो ऐसी स्त्री को हे सौभाग्यवति! मुझे (मेघ को) अपने पति का प्रिय सखा, मैं तुम्हारे पति का प्रिय सखा (हृदयनिहितैः तत्सन्देशैः त्वत्समीपम् आगतम्) हृदये निहितैः (सप्तमी तत्पुरुष) हृदयङ्गम, हृदय में रखे हुए तुम्हारे पति यक्ष के सन्देश, तुम्हारे पति ने जो सन्देश भेजा है वह हृदयस्थ है उसी हृदयगत यक्ष के सन्देशों को भावनाओं को तुम्हारे हृदय में देने आया हूँ तुम शंका न करना, तुम्हारे पास आया हूँ क्योंकि दूर से तो सन्देश दिए नहीं जा सकते, अन्यथा वह स्वयं ही दे देता, अतः उसने मुझे दूत = सन्देश वाहक बना कर भेजा है हृदयङ्गम कर उन सन्देशों के साथ तुम्हारे पास आया हूँ। (अम्बुवाहं विद्धि) अम्बु वहति इति अम्बुवाहं, जो जल को वहन

Scanned with CamScanner

वहन करता है, ले जाता है, जलकणों को कौन ले जाता है? मेघ ले जाता है, अतः मुझे मेघ जानो (यः मन्द्रस्निग्धैः ध्वनिभिः अबलावेणि मोक्षोत्सुकानि पथि श्राम्यतां प्रोषितानां वृन्दानि त्वरयति) यः = जो मेघ मन्द्र = गम्भीर, स्निग्ध = मधुर, ध्वनि = आवाजों से, मन्द्राश्च ते स्निग्धाश्च मन्द्रस्निग्धाः, तैः ..... मैं अपनी गम्भीर व मधुर ध्वनि से अबला = स्त्री, वेणी = चोटी, मोक्ष = खोलने के, उत्सुकानि = उत्सुक, अबलानां वेणयः अबलावेणयः, तासां मोक्षः, तस्मिन् उत्सुकानि, अबलावेणीमोक्षोत्सुकानि, स्त्री की चोटियों को खोलने के उत्सुक, कौन? पथ में, रास्ते में थके हुए, प्रोषित = प्रवासी परदेसियों के, वृन्दानि = समूह, मार्ग में थके हुए प्रवासियों के समूहों को, शीघ्रता करवाता हूँ, कहाँ के लिए? अपने अपने घरों में जाने के लिए। मौसम यदि ठीक न हो अधिक गर्मी या अधिक ठंडी हो, या अधिक वर्षा स्वतः व्यक्ति के अन्दर कामवासना रतिचेष्टाएं उत्पन्न नहीं होगीं पर यदि मौसम समशीतोष्ण है तो स्वतः एक दूजे के लिए भावना जागृत हो जाती है, जब व्यक्ति घर आने वाले मार्ग में हो और मेघ का गर्जन यदि सुनाई पड़ गया तो वह सहसा घर की ओर उत्सुकता से भगने लगेगा, उसी बात को कवि ने यहा कवि ने इंगित करने का प्रयास किया है।

भावार्थ- मेघ यक्ष की भार्या तथा अपनी भाभी यक्षिणी को विश्वास दिलाते हुए कह रहा है मुझे अपने पति का प्रिय मित्र समझो मैं यक्ष के सन्देशों को हृदयस्थ करके लाया हूँ मैं मेघ हूँ, मैं अपनी गम्भीर व मधुर आवाज से, पथ में थके हुए प्रवासी समूहों को, अपनी भार्याओं के वेणी को खोलने के उत्सुक हैं जो उनको शीघ्रता करवाता हूँ। जिससे दोनों ही एक दूसरे से आह्लादित व आनन्दित हो सकें।

पद्य- (4) इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा
त्वामुत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया वीक्ष्य संभाव्य चैवम्।
श्रोष्यत्यस्मात्परमवहिता सौम्य सीमन्तिनीनाम्,
कान्तोदन्तः सुहृदुपनतः संगमात् किञ्चिदूनः।
॥ उत्तरमेघ प०॥

प्रसङ्ग- कवि यहाँ यक्ष के द्वारा मेघ से अपना सन्देश भिजवाते हुए कह रहा है कि जब तुम प्रिया को यक्ष के सखा के रूप में परिचय दोगे तो वह उसी प्रकार उत्सुकता से सुनेगी जैसी सीता जी ने भगवान् राम के दूत हनुमान जी अपने प्रियवर के सन्देश को सुना था।

पदच्छेद- इति + आख्याते, इत्याख्याते यणसन्धि, मैथिलीवोन्मुखी - मैथिली + इव + उन्मुखी, दीर्घसन्धि तथा गुणसन्धि।

Scanned with CamScanner

त्वामुत्कण्ठोच्छ्वसितहृदया - त्वाम् + उत्कण्ठ + उच्छ्वसितहृदया। च + एवम् = चैवम् आदगुणः। श्रोष्यत्यस्मात्परमवहिता - श्रोष्यति + अस्मात् + परम् + अवहिता। कान्तोदन्तः कान्तस्य उदन्तः, कान्त + उदन्त, आर् गुणः गुणैकादेश। सुहृदुपनतः सुहृदा उपनतः सुहृदुपनतः (तृतीया तत्पुरुष) मित्र के द्वारा लाया गया। किञ्चिदूनः किञ्चित् + ऊनः थोड़ा ही कम।

व्याख्या -

हे मेघ! (इति एवम् आख्याते उन्मुखी उत्कण्ठोच्छ्वसित-हृदया) तुम्हारे इस प्रकार कहने पर (जैसा कि पूर्व श्लोक में कहा था कि मैं यक्ष का सखा हूँ) ऊपर मुख किए हुए, उत्कण्ठा से उत्सुकता के कारण उच्छ्वसितहृदया = विकसित = खिले हुए हृदय वाली (सा पवनतनयम् मैथिली इव त्वाम् वीक्ष्य संभाव्येच) वह मेरी प्रियतमा जैसे सीता जी हनुमान जी को देखकर, वैसे ही तुम्हें देखकर, और सम्मान करके (अस्मात् परं अवहिता श्रोष्यति) इसके पश्चात् सावधान होकर सुनेगी। प्रियतम के न होने पर दूत द्वारा लाया गया सन्देश ही प्रियतमा का सहारा है इसलिए वह ध्यानपूर्वक सुनेगी क्योंकि (सौम्य! सीमन्तिनीनाम् सुहृदुपनतः कान्तोदन्तः सङ्गमात् किञ्चित् ऊनः) हे सज्जनमित्र मेरे! सुहागिनियों के (प्रियतम के) सुहृद् उपनतः = मित्र के द्वारा लाया गया, कान्त उदन्तः = प्रियतम का वृत्तान्त मिलने से कुछ ही कम होता है, अर्थात् प्रियतम नहीं उसका सन्देश भी प्रियतम की तरह ही सुखकारक होता है।

भावार्थ -

जैसे सीता माता अशोक वाटिका में भगवान् राम के दूत पवनपुत्र हनुमान् जी से प्रियतम के सन्देश को सुनकर अत्यन्त आह्लादित हुई थी, उसी प्रकार जब मेघ की नन्हीं नन्हीं बूंदों से उठने के बाद खिड़की से उत्कण्ठावश ऊपर मेघ तुम्हारी ओर देखेगी तो सन्देश सुना देना क्योंकि प्रियतम का सन्देश भी प्रियतम के मिलन के समान ही सुखावह होता है।

पद्य - (5) तामायुष्मन्मम च वचनादात्मनश्चोपकर्तुम्,
ब्रूया एवं तव सहचरो रामगिर्याश्रमस्थः।
अव्यापन्नः कुशलमबले पृच्छति त्वां वियुक्तः,
पूर्वाभाष्यं सुलभविपदां प्राणिनामेतदेव॥
(उत्तर मे० ५०)

Scanned with CamScanner

पदच्छेद – तामायुष्मन् = ताम् + आयुष्मन् । वचनादात्मनश्चोपकर्तुम् = वचनात् + आत्मनः + च + उपकर्तुम्
झलांजशोन्ते, श्चुत्व, गुणैकादेश – आद् गुणः
सहचरो = सामगिर्या० सहचरः + सामगिर्या० इशि च विसर्गस्य उकारादेशः, उकारस्य गुणैकादेशः, विसर्गसन्धिः
कुशलमबले – कुशलम् + अबले । प्राणिनामेतदेव – प्राणिनाम् + एतत् + एव, जशादेशः हल्सन्धिः ।

प्रसङ्ग – इस श्लोक के माध्यम से यक्ष मेघ से कह रहा है कि मेरी प्रिया को मेरा कुशलक्षेम बता देना, जिससे मुझे तृप्ति मिलेगी और आपको पुण्य का लाभ ।

व्याख्या – (आयुष्मन्! मम वचनात् च, आत्मनः उपकर्तुं च, एवम् ब्रूयाः) हे चिरञ्जीव! = लम्बी आयु वाले मेघ! मेरे कहने से अर्थात् मेरी प्रेरणा से, आप मेरी सहधर्मिणी के पास जा रहे हैं तथा इसमें स्वयं का उपकार करने के लिए, क्योंकि जो दूसरे की सहायता करता है उसका उपकार तो सिद्ध हो ही जाता है अतः एवम् ब्रूयाः (उसे) इस प्रकार से कहना (अबले! तव सहचरः सामगिर्याश्रमस्थः) यहाँ यक्षिणी क्योंकि विरह से युक्त है अतः उसका सम्बोधन अबले = बल रहित या हे दुर्बल नारी! तुम्हारा सहचर = साथी जो सदैव साथ साथ रहते थे वही साथी 'सह + चर् + अच्' सामगिरेः आश्रमाः सामगिर्याश्रमाः, तेषु तिष्ठति इति सामगिर्याश्रमस्थः, रामगिरि पर्वत के आश्रमों में स्थित है, वहाँ उसका निवास है और उसकी दशा कैसी है वह भी सुन लो (अव्यापन्नः त्वां कुशलं पृच्छति) न व्यापन्नः अव्यापन्नः (नञ् तत्पुरुषः) व्यापन्न = मरा अव्यापन्न जो मरा नहीं है तुमसे मिलने की आशा में जीवित है, अर्थात् सान्त्वना रखो वह मृत नहीं है जीवित है और साथ में तुम्हारी कुशलता को पूछ रहा है, क्योंकि विपत्तियाँ तो सहज प्राप्त होती हैं अतः आपकी कुशलता कुशलक्षेम पूछ रहा है (सुलभविपदां प्राणिनाम् एतत् एव पूर्वाभाष्यम्) क्योंकि सरलता से विपत्ति को प्राप्त प्राणियों का यही प्रथम पूर्व = पहले प्रष्टव्य है। प्राणियों को विपत्ति बुलानी नहीं पड़ती अपितु ये तो मनुष्य मात्र को सहजता से अनायास ईश्वरप्रदत्त हैं अतः कुशल क्षेम पूछना प्रथम कर्त्तव्य है मेरा, और सब बाद में पूछा जायेगा। पूर्वभाष्यम् पूर्व + आभाष्यम् अवश्यम् आभाषयितुं योग्यम् आभाष्यम् जो सबसे पहले अवश्य कहने के योग्य हो, उसे पूर्वाभाष्यम् कहेंगे।

Scanned with CamScanner

भावार्थ — हे मेरे प्रिय मित्र आप चिरञ्जीवी रहो, आप मेरी छोटे भाई भी हो, क्योंकि मेरी पत्नी तुम्हारी भाभी है अतः आशीर्वादात्मक रूप में मेघ को सम्बोधित किया है हे आयुष्मन् वहाँ उस निर्बल हुई मेरी पत्नी से कहना कि मैं मरा नहीं हूँ जीवित हूँ रामगिरि पर्वतस्थ आश्रम में निवास है और तुम कुशलमंगल से हो? क्योंकि विपत्तियाँ तो व्यक्ति को सहजरूपेण प्राप्त होती है अतः पहले मैं यही पूछता हूँ आप कुशल से तो हैं?

Scanned with CamScanner